सं. ग्रो.वि./एफ़.डी./99-85/28502.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कालका जी कम्प्रेशर्ज वर्कस प्रा., मैं. के.जी. खोसला कम्प्रेशर्ज लि., 18/8 कि.मि., दिल्ली, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री ईश्वर लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रंधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री ईश्वर लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./101-85/28555.—चूंक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सलेकिटव सिकुरिटी सर्विस ब्यूरो प्रा.लि., सरस्वती [हाऊस, 27, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली के श्रमिक श्री कमला सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415/3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना को धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री कमला सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./एफ.डी./101-85/28562.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सलेकिटव सिकुरिटी सर्विस ब्यूरो प्रा. लि., सरस्वती हाऊस, 27, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली, के श्रमिक श्री जय पाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्याय-निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :---

व्यापाल सिंह की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

ते. ा ब., प्र ो / 101-85/28569. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सलेकिटव सिकुरिटी सर्विस ब्यूरो प्रा. लि., सरस्वतो हाऊस, 27, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली, के श्रमिक श्री पी.एस. उपाध्याय तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रंब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:--

• क्या श्री पी.एस. उपीध्याय की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठींक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

संग्रो वि√एफ.डी /101-85/28576.—चूंकि हरियाणा के राज्यापल की राय है कि में सलेकिटव सिकुरिटी सिविस ब्यूरो प्रा.लि., सरस्वती हाऊस, 27 नेहर प्लेस, नई दिल्लो, के प्रमिक श्रो जयवन्द सिंह तथा उतके प्रवस्त्रकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं\।

इस लिएं, अब, बोडोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए; हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना को धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादणस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिए-निर्दिण्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बोच या तो विवादणस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री जय चन्द सिंह की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह कि राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि/एंफ डी/101-85/28582.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. सलेकिटव सिकुरिटी सर्विस ब्यूरों प्रा.लि., सरस्वती हाऊस, 27. नेहरू प्लेस, नई दिल्ली के श्रमिक श्री रिवन्द्र कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है, ;

श्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, सब, सौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खेण्ड (ग) द्वारो प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना को धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री रिवन्द्र कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं ती वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 10 जुलाई, 1985

सं.श्रो.वि./एफ.डी./33-85/28701.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. युनिवर्सल मोल्डरज प्लाट नं. 85 इन्डस्ट्रीयल इस्टेंट सैक्टर-6, फरीदाबाद के श्रमिक श्री यशपाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है,

• भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के ल कि द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का श्रूप्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकोरी ग्रिधिसूचना सं 5415-3-थ - 13 54. दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं 11495-जी-स्नम-57/11245, दिनोंक 7 फरवरी, 1933 कार कि कि की धारा 7 के ग्रधीन गठित अम न्यायालय फ़रीदाबाद ब्राह्म बिवादग्रस्त था उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्याय- निर्णय के लिये निर्दिध्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा . संबंधित, मामला है :---

क्या श्री यशपाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?